thearyasamaj.org
वर्ष-११ अंक-३
२७ नवम्बर २०१४

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14
एक प्रति- २०-०० रू.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

thearyasamaj.org

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-११ अंक-३

२७ नवम्बर २०१४

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३

विक्रम संवत् २०६९

दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी

कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक

मुकेश कुमार यादव

फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.

वार्षिक-२००-०० रू.

आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

संपादकीय	4
दुनिया का ये कैसा अजब दस्तूर है,	6
परमात्मा ही रक्षक है	11
लाला लाजपतराय	12
क्रियात्मक योगाभ्यास से लाभ	14
सदा पवित्र, सदा निष्पाप	17
अन्वेषण	18
ईश्वर अद्भुत कलाकार है	19
विदेश में वेद प्रचार	24
श्रीमद् दयानन्द निर्वाण दिवस, दीपावली पर्व मनाया	26

नवम्बर माह के पर्व, त्यौहार, दिवस, जयंतियाँ

2	गीता जयंती
3	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती, भोपाल गैस त्रासदी दिवस किसान दिवस
4	जल सेना दिवस
6	डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती
7	झण्डा दिवस
10	विश्व मानव अधिकार दिवस
14	ऊर्जा बचत दिवस रूकमणी जयंती
23	स्वामी दयानन्द बलिदान दिवस
24	राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस
25	पं. मदनमोहन मालवीय जयंती, क्रिसमस-डे
28	गुरु गोबिन्द सिंह जयंती

thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

धर्म के स्वरूप को जानना और उसे मानना महत्वपूर्ण है

जीवन सफलता के लिए किसी सत्य ज्ञान की जानकारी प्राप्त करना पहली आवश्यकता है। बिना सही ज्ञान के हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। स्वाध्याय, सत्संग, विद्यालय, महाविद्यालय प्रशिक्षण केन्द्र आदि से हमारे ज्ञान को विकसित किया जा सकता है। विकसित करने के पीछे किसी तथ्य की मूल भावना व उसके महत्व को जानना और उससे जीवन में लाभ उठाना है।

उदाहरण के लिए मान लीजिए कोई किसी अपरिचित शहर में जाता है, वहां की भौगोलिक स्थिति की जानकारी के लिए उस शहर के किसी जानकार व्यक्ति से चर्चा करके समस्त शहर की बसाहट की जानकारी प्राप्त कर लेता है। शहर के किसी नक्शे को देखकर भी वह जान लेता है कि अमुक स्थान अमुक स्थान पर स्थित है। व्यक्ति का शहर का भ्रमण करना उद्देश्य है किन्तु जानकारी प्राप्त करने पर भी उसको मूर्त रूप (Implimention) नहीं देता।

क्या हम कह सकते हैं कि इस व्यक्ति ने शहर भ्रमण के उद्देश्य को प्राप्त कर लिया ? आपका उत्तर होगा, निश्चित ही नहीं।

व्यक्ति ने अपने लक्ष्य का आधा कार्य कर लिया, उसने सभी स्थानों की जानकारी प्राप्त कर ली। यह उचित है और आवश्यक भी था। परन्तु उस जानकारी के अनुसार वहां जाने का प्रयास ही नहीं किया, उस मार्ग पर चला ही नहीं, इसलिए वह ज्ञान व्यर्थ हो गया। बिना प्रयास व कर्म किए ज्ञान तक सीमित रह गया और लक्ष्य तक नहीं पहुंचा।

यही स्थिति आज समाज की है, अच्छे–अच्छे उपदेश सुनते हैं, अच्छी ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों को पढ़ते हैं। इस प्रयास से सत्य ज्ञान के नजदीक भी आ जाते है। क्या सत्य है, क्या धर्म है, क्या असत्य है, क्या पाप है इसका ज्ञान भी हो जाता है। परन्तु जीवन में उसे उतारने का काम नहीं करते। केवल ज्ञान संग्रह से ही सतकर्मों की, धर्म की पूर्ति मान लेते हैं। धर्म के संबंध में ऐसा व्यवहार सही रूप में धर्म पालन नहीं है।

अज्ञानतावश या अनजाने में की गई गलती करने वाला इतना दोषी नहीं है जितना किसी सही गलत की जानकारी रखने वाले व्यक्ति की जानकारी होने पर भी गलत कार्य करता है, और सही ज्ञान की उपेक्षा करता है। फिर वह व्यक्ति क्षमा का पात्र नहीं, वह बड़ा अपराधी है।

विश्व विख्यात विद्वान आचार्य मनु के अनुसार शुद्र (ज्ञान रहित) व्यक्ति को किसी अपराध के लिए जो दण्ड दिया जाता है उसकी तुलना में ज्ञानवान (ब्राह्मण) को उसी दण्ड को कई गुना अधिक बढ़ाकर दण्डित किया जाना चाहिए।

इसलिए मात्र सत्य ज्ञान की धर्म मार्ग की जानकारी से कोई महान नहीं बन जाता, विद्वान भी नहीं कहा जा सकता और धर्मात्मा भी नहीं माना जा सकता। यह

thearyasamaj.org

सब बनने के लिए ज्ञान के साथ आचरण में उसका होना परम आवश्यक है। मात्र ज्ञान ही पर्याप्त होता तो रावण और दुर्योधन को हम हेय दृष्टि से क्यों देखते ? दोनों ज्ञानी थे।

दुर्योधन ने कृष्ण को यही तो कहा था –

जानानि धर्मे न च मे प्रवृत्ति,
जानामि धर्मं न च मे निवृत्ति।
केनापि देवेन हृ दिस्थितेन,
यथा नियोक्ति तथा करोमी।।

दुर्योधन कहता है मैं धर्म को जानता हूं, उसके बिना मेरा जीवन सफल नहीं, उसके उल्लंघन से पतन है, पर क्या करूं मेरा हृदय इसे मानने के लिए स्वीकृति नहीं देता।

वर्तमान समाज इसी दुर्योधन की प्रवृत्ति का शिकार है, जानकर भी अंजान बना हुआ है। धार्मिक बनना नहीं चाहता किन्तु वह अपने को धार्मिक दिखाना चाहता है।

आज के परिवेश में इसीलिए कहा –

धर्मं प्रसंगादपि ना चरन्ति,
पापं चरन्ति सत्नतः।
एतत्तु चित्रं हि मनुष्य लोके,
अमृतं परित्यज्य विषं पिबन्ति।।

हमारा समाज प्रदर्शन प्रधान समाज होता जा रहा है।

प्रत्येक क्षेत्र में औपचारिकताओं ने यथार्तता को चारों ओर से ढ़ांक दिया है, इस कारण यत्र–तत्र–सर्वत्र दिखावा ही दिखावा फैलता जा रहा है। किन्तु यह मानव जाति के लिए शुभ चिन्ह नहीं है। धर्म का प्रचार–प्रसार आचरण से होगा। सत्संग, उपदेश, व्याख्यान, कथाएं मार्ग दिखाती हैं, पर उन पर चलकर उन्हें आत्मसात करके ही कुछ अच्छा प्राप्त कर सकते हैं।

सफलता के पांच मूल सूत्र

0 मन में कार्य करने की तीव्र इच्छा

0 कार्य करने के लिए पर्याप्त साधन

0 साधनों का प्रयोग करने की यथार्त विधि

0 अन्तिम परिणाम आने तक पूर्ण पुरूषार्थ

0 बाधकों को सहन करने हेतु घोर तपस्या

thearyasamaj.org

दुनिया का ये कैसा अजब दस्तूर है, जो सदा पास है वही हमसे दूर है

— प्रकाश आर्य, महू

जीवन में अज्ञान हमें निकटता से दूर कर देता है, ज्ञान न होने से व्यक्ति अपने बहुत निकट की वस्तु को भी देख नहीं पाता और उसे इधर उधर ढूढ़ने लगता है। कभी कभी हम घर में संभाल कर रखी वस्तु को रखकर भूल जाते हैं जब वह स्थान हमारे ज्ञान से ओझल हो जाता है, जहां वह वस्तु रखी है तब इस स्थिति में हम बड़ी बेसब्री से उस वस्तु को ढूंढ़ने लगते हैं कई बार उस स्थान के पास से गुजर जाते है किन्तु फिर भी उसे देख नहीं पाते।

जिस जगत में हम रहते है परमात्मा उसी जगत के बाहर भीतर और सम्पूर्ण जगत में व्याप्त है। हम जहां है वही वह परमात्मा भी है। **यजुर्वेद के एक मंत्र में बताया गया "स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासू"** अर्थात वह यहां वहां सर्वत्र व्यापक है। **संत तुलसीदास ने भी कहां हरिव्यापक सर्वत्र समाना** वेद के मंत्र ने कहा **"ईशा वास्यमिद ्सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।"** उस परमात्मा की कृपा में ही सर्व जगत आच्छादित है अर्थात वह सब जगह विद्यमान है। **पुनः यजुर्वेद के मंत्र में कहां तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तदवान्तिके, तदन्तरस्य सर्वस्य सर्वस्यास्य बाह्यतः।** अर्थात वह पास भी है दूर भी, वह चलाय मान भी है स्थिर भी वह अन्दर भी है और बाहर भी।

इस प्रकार वह सभी जगह विद्यमान है उससे कोई भी स्थान छूटा हुआ नहीं है। वह इस जगत के कण कण में है तो फिर हमसे उसकी स्थान की दूरी कैसे हो सकती है ? वह तो सदा हमारे साथ ही रहता है, वेद में बताया **अन्ति सन्तम न जहातयन्ति** वह हमारे मन मंदिर में हृदय में रहता है, वह कभी हमसे दूर नहीं किया जा सकता।

ईश्वर हृदय में निवास करता है, यह सन्देश हमें गीता में भी दिया कि उसका स्थान हमारे इसी शरीर में बताते हुए योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी ने कहा – **"ईश्वर सर्व भूतानां हृदेशे अर्जुन तिष्ठति"** अर्थात वह हृदय में ही निवास करता है। महान तार्किक और विद्वान नचिकेता ने भी कहा **"गुहायस्याम निहितं ब्रह्म शाश्वत त्वं भूतयोनिं परि पश्यन्ति धीराः"** बताया कि पंच तत्वों से बने इस शरीर में ही वह परमात्मा रहता है। यजुर्वेद के मन्त्र में पुनः कहा **"वेनस्तत्यश्यन्ति निहितं गुहाः।"** विद्वान उसे अपने हृदय में देखते हैं। एक शायर ने लिखा – **दिल के आईने में है तस्वीरे यार। गर्दन झुकाई और देखली।।**

इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है कि परमात्मा यत्र–तत्र–सर्वत्र और सदा हमारे पास है हमारे हृदय में है परन्तु अज्ञानता वश हम उसे बाहर स्थान–स्थान पर ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं। जो उपलब्ध है उसे कहीं ओर जाकर प्राप्त करने का प्रयास करनां भूल है, अज्ञानता है, नियम विरूद्ध है और कहा – **उपस्थितं परित्यजानुपस्थितं याचत् इति बाधित न्यायः।** जो प्राप्त है उसका त्याग करना अन्यत्र इच्छा न्याय करना नहीं है।

thearyasamaj.org

प्रचलित काल्पनिक अवैदिक विचारधारा के कारण हमने यह गलत धारणा बना रखी है जिसमें हम उस ईश्वर को संसार की अन्य भौतिक वस्तुओं के समान ही इन चर्म चक्षुओं से देखकर उसे पाना चाहते हैं।

ऐसी मान्यता बिलकुल गलत व हमारे शास्त्रों तथा सनातन धर्म के उद्गम ज्ञान के स्त्रोत वेदों के विरूद्ध हैं।

कठोपनिषद् में यही बात समझाते हुए हमें संकेत दिया – **न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यन्ति कश्च नैनन।** अर्थात वह परमात्मा रूपवान अर्थात साकार, या शरीरी नहीं है, इन चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता है। उसे विद्वान जन अपने ज्ञान व विवेक से निरन्तर अपने पास ही पाते हैं। यजुर्वेद के इस मन्त्र में यही तो कहा **"वेनस्तत्वश्यन्त निहितं गुहा"** जिसमें बताया गया कि विद्वान जन उस परमात्मा को हृदय रूपी गुहा में ही देखते हैं।

परमात्मा हमसे दूर नहीं है, हमने उससे दूरी बना रखी है। बहुत पास होने पर भी यदि किसी वस्तु और हमारे मध्य कोई अवरोध है तो वह अवरोध उसे देखने से हमें रोकता है, उसके लाभ से वंचित हो जाते हैं, जैसे आपके कक्ष में पंखा या कूलर चल रहा है, किन्तु बीच में कोई बड़ी वस्तु खड़ी हो जावे तो आप तक उसकी हवा को आने से रोक देती है और नजदीक रहते हुए भी वह हमसे अलग हो जाता है।

अब यहां थोड़ा ध्यान दीजिए, ईश्वर के संबंध में दूरी या बाधा क्यों है, कौन सी है, वे क्या कारण हैं जिससे ईश्वर हमसे दूर है। थोड़ा चिन्तन करने पर आप ईश्वर की दूरी को समाप्त करके हमेशा उसके साथ अपने को पा सकते हैं। तो थोड़ा ध्यान दीजिए, दूरियां तीन प्रकार की होती हैं, **स्थान की, समय की, और ज्ञान की।**

0 ईश्वर सर्वव्यापक है कण–कण में समाया है, इसलिए हर जगह वह मौजूद है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह हमारे आस पास ही है। जहां हम हैं वहां वह भी है, इस प्रकार हर जगह मौजूद होने से स्थान की उसके और हमारे बीच दूरी नहीं है।

0 ईश्वर हमेशा रहता है इसलिए उसके और हमारे मध्य काल की, ईश्वर के संबंध में भिन्नता सब उसकी सही जानकारी न होने के कारण हैं, समय की दूरी भी नहीं है।

0 ईश्वर के हमारे मध्य जो दूरी है वह ज्ञान की दूरी है। हमने ईश्वर के स्वरूप को, उसकी महानता को, उसके कार्यों को जाना ही नहीं, उसके रहने के स्थान पर हम भ्रमित हैं मानवीय रचना और कार्यों के अनुसार उसे मान रहे हैं, इस कारण दुनिया के चक्कर उसको देखने के लिए लगा रहे हैं, फिर भी अतृप्त हैं। कोई उसे पृथ्वी पर, मन्दिरों, गुफाओं, पहाड़ों, नदियों में देख रहा है, कोई उसे भूमि के नीचे देखना चाहता है, कोई उसे 4 थे, तो कोई 7 वें आसमान पर उसके रहने का ठिकाना मान रहा है।

thearyasamaj.org

ध्यान दीजिए, जिस दिन उसके संबंध में पूर्ण जानकारी हो जावेगी, उसी दिन से उसके और हमारे बीच ही दूरी समाप्त होकर सदा–सदा के लिए निकटता हो जावेगी। फिर हम उसे ढूंढ़ने में, जो समय, धन और शक्ति लगा रहे हैं, उससे बच जावेगें। इसलिए परमात्मा और हमारे मध्य जो दूरी का कारण है वह अज्ञान है, उसकी महानता को, उसके अस्तित्व को, उसके स्वरूप को, उसके कार्यों को समझने का ज्ञान न होने से यह दूरी हमने स्वयं बना रखी है। यह बड़ा विचित्र व्यवहार समाज में देखा जा रहा है।

आदमी मौत को जानता है, पर मानता नहीं।
और ईश्वर को मानता है, पर जानता नहीं।।

जब हमें किसी वस्तु का पूर्ण ज्ञान हो जावे तो उसको ऑखों से देखें बिना भी उसकी जानकारी हो जाती है। जैसे किसी ऐसे व्यक्ति को जिसे गुलाब के फूल की पूर्ण जानकारी है उसकी सुगन्ध से परिचित है, यदि उसकी ऑखें बन्द कर दी जावे और उसकी नाक के पास फूल कर दिया जावे तो सूंघकर बिना ऑखों से देखे भी बता सकता है कि वह गुलाब का फूल है।

कोई व्यक्ति जिसे पेन, मोबाईल, घड़ी आदि वस्तुओं की पूर्ण जानकारी है, ये वस्तुएं उसकी ऑख बन्द करके उसके हाथ में रख दी जावें तो वह बिना देखे भी उसको पहचान लेगा। क्योंकि यह जानकारी इन बाहरी ऑखों से नहीं, ज्ञान की ऑखों से प्राप्त हुई।

ठीक इसी प्रकार परमात्मा इन चर्म चक्षुओं से नहीं ज्ञान चक्षुओं से देखने, उसका अनुभव करने से होती है।

उसके संबंध में पूर्व ज्ञान प्राप्त करके ही उसकी और हमारे बीच की दूरी समाप्त हो सकती है, वह हमारे साथ और हम सदा उसके साथ रहेगें। इधर – उधर कहीं भटकने से बच जावेगें।

ईश्वर को अपने से अलग मानकर ढूंढ़ना वैसा है जैसे स्वामी शंकराचार्य जी ने कहा **"स्वगृहे पायसं त्यक्ता भिक्षा मिच्छन्ति दुर्मते"** अपने घर तो पकवान, खीर बनाकर रखी है परन्तु घर–घर जाकर भूख मिटाने हेतु भिक्षा मांगने लगे।

जैसे भारत के राष्ट्रपति का कार्यक्षेत्र, उसका महत्व पूरे राष्ट्र में है किन्तु हम उसे किसी नगर या ग्राम अथवा स्थान तक सीमित कर दे तो ? यह उसकी गरिमा व महानता को कम करेगा। इसलिए परमात्मा जो सर्वव्यापक, हर समय है, उसे समय व स्थान की सीमा न मानें।

सारे जहां में हर वक्त उसका नजारा है।
फिर भी न देख सके तो, दोष हमारा है।।

thearyasamaj.org

इसलिए, परमात्मा को बाहर नहीं अन्दर देखें, बाहर भी उसके होने का अनुपम, आश्चर्यजनक जीवन रक्षक, छोटी से छोटी और विशाल कृति को देखकर कर सकते हैं। इन चॉद सितारों का, सूर्य जैसे ग्रहों का नियन्ता कौन हो सकता है? विशाल समुद्र और हिमगिरी जैसी कृति किसके द्वारा है ? विभिन्न फूलों और फलों की सुगन्ध और स्वाद के पीछे कौन है ? अनगिनत वृक्षों की पत्तियों की अलग–अलग डिजाईन कौन बनाता है ? बिना किसी के बनाए तो कुछ बनता नहीं, फिर इन सबका बनाने वाला कौन है ? क्या यह मानवीय प्रयास है ? नहीं, नहीं इनको बनाने वाला वही एक जगदीश्वर है, जो समस्त विश्व में, ब्रह्माण्ड में अपनी दया की वर्षा करके श्रृजन कर रहा है। जगत का पालक व रक्षा कर रहा है। उसका दर्शन, आत्म चिन्तन और अनुभव करने से होता है अन्यथा –

सामने है, पर नजर आता नहीं।
योग साधन के बिना उसे कोई पाता नहीं।।

इसलिए ईश्वर भक्ति उसका सानिध्य, उसका दर्शन एकान्त में, शोरगुल से दूर, स्वच्छ, सुगन्धित स्थान पर बैठकर प्राप्त करें। नदियों के किनारे उनके संगम स्थल पर, पहाड़ों की तलहटी में, चोटी पर, घने वनों में जाकर उस प्रभु का चिन्तन कर सके, सांसारिक कार्यों में चिन्ताओं, अभावों, विवादों से दूर केवल–केवल प्रभु चिन्तन करने की दृष्टि से ही उपासना गृहों (मन्दिरों), तीर्थ स्थलों का निर्माण किया गया। वहां जाकर ही ईश्वर मिलेगा, या हमारे गृह नगर से अच्छी श्रेणी का ईश्वर मिलेगा, जल्दी मिलेगा।

कृपया, इन उदाहरणों से समझिए हम ईश्वर को प्राप्त करने के लिए जो प्रयत्न करते हैं, वह कितना उचित है ? एक और उदाहरण से समझाने का प्रयास करें। मान लीजिए, आपको कुछ लिखना है, एक पेन आपकी जेब में लगा हुआ है और उक पेन आपके मकान की चौथी मंजिल पर रखा है। यहां लिखने के लिए आप किस पेन का उपयोग करना उचित समझेगें ? जो जेब में पास ही रखा है, उसका उपयोग करेगें या चार मंजिल पर रखे पेन का? निश्चित ही जेब में रखे पेन का उपयोग करना उचित समझेगें, क्योंकि इससे आपका श्रम बचेगा, समय बचेगा और पास में है तो उसके प्रति निश्चितता भी रहेगी।

थोड़ा विचार करें, हमारे पूर्वजों ने अनेक विद्वानों ने, सन्तों ने, धर्मग्रंथों में यह समझाया कि ईश्वर सदा हमारे साथ है, हमारे हृदय में है, कण–कण में है, सब जगह है किन्तु हमने उनकी इस बात को अनदेखा कर रखा है, और उनके इन विचारों के उसे सब जगह और हृदय में न मानते हुए उसका कोई निश्चित स्थान मान रखा है और वहां जाकर देखना चाहते हैं हमारी स्थिति कुछ ऐसी है –

समय की आन्धी में हम भटक रहे हैं।
मंजिल है इधर, पर उधर चल रहे हैं।।

यह कितना बड़ा अपने आप से मजाक है जो सदा पास है, उसे हमने दूर बना दिया और "भ्रमित हो चौराहे पर मंजिल ढूंढ़ रहे हैं, जहां जाना चाहते, उसी के नीचे खड़े हैं।"

thearyasamaj.org

इसलिए धर्म और ईश्वर के नाम पर काल्पनिक मान्यताओं से घिरे भाई सत्य को समझें परमात्मा के सर्वव्यापक अस्तित्व को सीमित न करे, कुछ स्थानों पर ही उसको मानना उसकी महानता और सर्वव्यापकता को नकारना होगा, यह परमात्मा का अनादर है।

हमारे ग्राम या नगर के ईश्वर से या मूर्ति से वहां की मूर्ति, स्थान, भगवान सिद्ध है, वहां साक्षत दर्शन होगें, यह मान्यता मानसिक भ्रम है, अज्ञानता का द्यौतक और काल्पनिक मान्यता है। ईश्वर में उसकी मूर्ति में समझकर स्थान में अन्तर करना उसकी महानता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है।

इसी मान्यता से हम उसे ढूंढने में जीवन लगा देते हैं, भटकते हैं समय, शक्ति, पैसा सब उसे ढूँढ़ने में लगाते हैं जो हमारे पास सदा से है, सदा रहेगा।

तो आईए, ईश्वर को मानने के पूर्व उसे जाने यह स्तुती कहलाती है, फिर उससे अपने पुरूषार्थ के साथ सहायता कृपा की प्रार्थना करें और फिर उसके पास बैठने उसे प्राप्त करें यही उपासना है, बाहरी वस्तुओं की भेंट से वह प्रसन्न नहीं होगा क्योंकि यह तो सब उसी का है। उसे आत्मा, मन, बुद्धि की पवित्रता से उसकी आज्ञा पालन करके प्रसन्न किया जा सकता है। धर्म पथ अपनाकर अधर्म को त्याग कर प्राणीमात्र से प्रेम कर सेवा दान परमार्थ से उसके प्रिय बन सकते हैं। इसके लिए कहीं जाने की नहीं अपने ही घर, नगर में रहकर यह सब कुछ कर सकते हैं।

Ancient Verses

Dr. Priyavrata Das

मधुवाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्न सन्त्वोषधीः।। यजु. 13/27

May the wind filled with fargrance blow softly.

May the rivcrs flow calmly.

ectioning sweet melody And the plants grow their yiold with fresh vitality.

Forus, the law abiding devotees. yajurveda 13/27

Vedic Beliefs

Chapter 1

Q. Who had imparted this wisdom in the vedas. and when and why ?

Ans. The absolute had imparts the Knowledge of the four vedas,
at the beginning of every cycle of creation for well being of mankind.

Q. What is the name of your religon ?

Ans. It is called Vedic religion.

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द ने कहा –

परमात्मा ही रक्षक है

महाराज पूर्व की यात्रा के लिए समुद्यत थे, इसलिए पंजाबी भक्त उनके प्रस्थान दिवस पर दुःख का अनुभव कर रहे थे। एक प्रेमी ने विनय की – भगवन्! आपने इस प्रान्त में आर्य समाज रूपी उद्यान तो स्थान–स्थान पर लगा दिये हैं, परन्तु आपके चले जाने के पश्चात इनकी रक्षा कौन करेगा ? महाराज ने उत्तर दिया कि – इस प्रान्त के लोग उत्साह और साहस वाले हैं, श्रद्धालु और वीर हैं, मुझे इन पर बड़ी आशा है। मैंने अपने सकल सामर्थ्य से भूमि को स्वच्छ बनाकर उद्यान लगाया है। खाद भी इसमें पड़ गया है। जल भी सींचा जा चुका है। अब इसके मुरझाने और कुम्हलाने की कुछ भी चिन्ता नहीं है। यह सब कुछ होते हुए भी, ऐसे सब कार्य भगवान् भरोसे ही किये जाते हैं, इसलिए आर्य समाज का भी वही रक्षक है, जो इन्द्र और सूर्य को चलाता है और उनकी रक्षा करता है।

ईंट बरसाने वाले पुष्प वर्षा करेगें

लाहौर से महाराज अमृतसर पधारे और सरदार भगवानसिंह के मकान में ठहरे। पण्डितों ने इस बार भी विरोध किया। एक दिन सात–आठ पण्डित तिलक लगाये हुए अपने चेलों सहित शास्त्रार्थ करने के लिये आये और अकड़कर स्वामीजी के सम्मुख बैठ गये। शास्त्रार्थ तो उन्हें क्या करना था, उनके चेलों ने ईंट, पत्थर फेंकने आरम्भ कर दिये। सभा स्थान को धूलि वर्षा से धूसरित कर दिया। महाराज के इस अपमान को देखकर भक्तजन कुपित हो उठे। उन्हें शान्त करते हुए स्वामीजी ने कहा – "मद मदिरा में उन्मत्त जनों पर कोप नहीं करना चाहिए। हमारा काम एक वैद्य का है उन्मत्त मनुष्य को वैद्य औषधी देता है। निश्चय जानिए आज जो लोग मुझ पर ईंट पत्थर और धूल बरसाते हैं, वही लोग पछताकर कभी पुष्प वर्षा करने लग जाएंगे।"

जब महाराज अपने डेरे पर पधारे तो एक भक्त ने कहा – महाराज ! आज दुष्ट लोगों ने आप पर बहुत धूल–राख फेंकी और आपका घोर अपमान किया। महाराज ने कहा – परोपकार और परहित करते समय अपना मानापमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता। मैंने आर्य समाज रूपी उद्यान लगाया है, इससे मेरी अवस्था एक माली की है। पौधों में खाद डालते समय राख और मिट्टी माली के सिर पर भी पड़ जाया करती है। मुझ पर धूल राख चाहे जितनी पड़े मुझे इसकी कुछ भी चिन्ता नहीं, परन्तु वाटिका हरी–भरी बनी रहे और विर्विघ्न फूले फले।

thearyasamaj.org

आर्य समाज के मूर्धन्य –

लाला लाजपतराय

आर्य समाज के जिन महापुरूषों ने स्वदेश हित के सर्वोत्कृष्ट बलिदान किये, उनमें लाला लाजपतराय का नाम चिरस्मरणीय है। ये वही बलिदानी थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि राष्ट्र भक्ति का पाठ उन्होंने स्वामी दयानन्द से सीखा है, और आर्य समाज रूपी माता की गोद में बैठकर ही वे स्वदेश हित के लिए कुछ कर पाए हैं।

जन्म से वैश्य, किन्तु गुण, कर्म एवं स्वभाव से क्षत्रिय, लाला लाजपतराय का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला फरीदकोट के एक गांव ढुंढ़के में 28 नवम्बर 1865 को हुआ। उनके पिता लाला राधाकृष्ण उर्दू फारसी के अच्छे जानकार तथा पेशे से अध्यापक थे।

1880 में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाजपतराय लाहौर आए। गवर्नमेंट कॉलेज से एफ. ए. तथा कानून की मुख्तारी परीक्षाएं साथ–साथ उत्तीर्ण की। 1882 के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए। लाला साईंदास की प्रेरणा से वे समाज के सदस्य बने। पं. गुरूदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहां कॉलेज में लाला लाजपतराय के सहपाठी थे, वहां ये लोग आर्य समाज में भी उनके सहयोगी कार्यकर्ता थे।

डी ए वी कॉलेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपतराय का भी मूल्यवान सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिध मण्डलों के सदस्य बनकर कॉलेज की स्थापना के लिए धन संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगरों में जाते रहे। जब यह महाविद्यालय सुचारू रूप से चल पड़ा, तब इसकी शिक्षा नीति प्रभावी एवं गतिशील बनाने में लालाजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कालान्तर में डी ए वी कॉलेज में संस्कृत तथा वेदादि शास्त्रों के पाठ्यक्रम के स्वरूप और उसकी रूपरेखा को लेकर आर्य नेताओं में अनेक प्रकार के मतभेद उभर आए, किन्तु लालाजी ने इस विवादास्पद विषय पर पर्याप्त संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।

1920 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग और सत्याग्रह के आन्दोलन चलाए गए और सरकारी स्कूलों और कॉलेजों के बहिष्कार की बात आई। तब लाला लाजपतराय ने भी डी ए वी कॉलेज के संचालकों को, देश की आजादी के महत्तर उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ काल के लिए कॉलेज को बन्द कर देने कर देने का सुझाव दिया। यह दूसरी बात है कि महात्मा हंसराज ने अपनी दूरदर्शिता से ऐसा कदम उठाने से इंकार कर दिया। उनकी दृढ़ धारणा थी कि किसी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक महत्वपूर्ण तथा स्थायी हित के कार्य की बलि नहीं दी जानी चाहिए।

thearyasamaj.org

1888 में वे कांग्रेस आन्दोलन से जुड़े। प्रथम बार वे इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए। 1906 में पं. गोपालकृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए। वहां से वे अमेरिका चले गए और देश की स्वतंत्रता के लिए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया।

लाला लाजपतराय ही प्रथम महापुरूष थे, जिन्होंने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया, और ब्रिटिश ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतन्त्रता प्राप्त करने के कांग्रेस के आदर्शका विरोध किया। उन्होंने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिन चन्द्र पाल के सहयोग से कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचारधारा का प्रवेश कराया। उन्होंने 1905 की बनारस कांग्रेस में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन के समय, उनका स्वागत करने का डटकर विरोध किया। सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय ने कांग्रेस की नरम नीतियों का प्रबल विरोध किया था।

पंजाब में किसान जागृति और उससे उत्पन्न क्रान्तिकारी राजनैतिक चेतना के सूत्रधार लालाजी ही थे। उनके और सरदार अजीतसिंह के जोशीले व्याख्यानों से भयभीत होकर, तत्कालीन शासन ने उन्हें देश से निर्वासित कर बर्मा के मण्डले नगर में नजरबन्द कर दिया। किन्तु शासकों के इस अत्याचारपूर्ण कृत्य के प्रतिरोध में उठे प्रबल जनमत की अव्हेलना करना सरकार के लिए संभव नहीं था। लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह को शीघ्र ही रिहा करना पड़ा। स्वदेश लौटने पर एक लोकप्रिय जन नायक के रूप में उनका स्वागत हुआ और जनता ने उन्हें सिर ऑखों पर उठा लिया।

आर्य समाज में रहकर ही लालाजी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। 1899 में जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया, तब लालाजी अपने साथियों को लेकर अकाल राहत कार्यों में जुट गए।

अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की भांति उभर चुके थे। 1920 में विदेश यात्रा से लौटने पर, उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया। इसी वर्ष वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। 1924 में उन्होंने स्वराज्य पार्टी का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए।

लालाजी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे एक श्रेष्ठ वक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्ता समर्पित समाज सेवक, शिक्षाशास्त्री, गंभीर चिन्तक तथा विचारक थे।

उनकी लिखी "दी आर्य समाज" नामकी पुस्तक 1914 में इंग्लैण्ड से प्रकाशित हुई। लाला जी ने अपनी आत्म कथा भी लिखी है।

thearyasamaj.org

क्रियात्मक योगाभ्यास से लाभ

योगाभ्यास किसी एक क्रिया विशेष का नाम नहीं है, अपितु इस शब्द से योगदर्शन में बताये गये योग के आठों अंगों (यम–नियम आदि) का ग्रहण करना चाहिए। जो व्यक्ति इन योग श्रद्धा, तपस्या पूर्वक लम्बे काल तक इनका पालन करता है, उसको निम्नलिखित लाभ होते हैं –

1. बुद्धि का विकास होता है, जिससे व्यक्ति बहुत कठिन और सूक्ष्म विषयों को भी, सरलता व शीघ्रता से समझ लेता है।
2. स्मरण शक्ति बढ़ती है, जिससे व्यक्ति देखे, सुने, पढ़े, विषयों को जब चाहे तब उपस्थित कर लेता है।
3. कार्य करने में एकाग्रता बढ़ती हैं, जिससे कार्य अच्छा सम्पन्न होता है।
4. शरीर, मन, इन्द्रियों पर नियन्त्रण होता है।
5. अपने दोषों और बुरे संस्कारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, ईर्ष्या, द्वेष आदि) का ज्ञान होता है और इनका नाश भी होता है।
6. अच्छे संस्कार (त्याग, सेवा, परोपकार, दया, दान आदि) जागृत होते हैं, और इनकी वृद्धि भी होती है।
7. साधक निष्काम करने वाला बनता है।
8. ईश्वरीय गुणों (ज्ञान, बल, आनन्द, निर्भयता, सत्य, न्याय, सन्तोष आदि) की प्राप्ति होती है।
9. साधक जानबूझकर झूठ, छल, कपट, अन्याय आदि पाप कर्मों को नहीं करता और पापों के दुःख रूप फल से बच जाता है।
10. शारीरिक एवं मानसिक दुःखों को सहन करने की शक्ति बढ़ती है।
11. मन, बुद्धि, इन्द्रियां सूक्ष्म–भूत, जगत का कारण प्रकृति आदि सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान होता है।
12. "मैं कौन हूं" मुझे क्या करना चाहिए ? इत्यादि आत्मा विषयक प्रश्नों का समाधान हो जाता है। (आत्मा का प्रत्यक्ष हो जाता है।)
13. ईश्वर की महानता का ज्ञान होता है, जिससे ईश्वर के प्रति अत्यन्त श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, आकर्षण उत्पन्न होता है।
14. ईश्वर का प्रत्यक्ष (साक्षात्कार) होता है, फलस्वरूप उससे विशेष ज्ञान, बल, आनन्द आदि की प्राप्ति होती है।
15. संसार के सब दुःखों से छूटकर, आत्मा ईश्वर के नित्य आनन्द को भोगता है। (मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।)

– **कैलाश काका पाटीदार**
आर्य समाज ग्राम सुवासा

thearyasamaj.org

भिखारी और नेता

एक भिखारी और नेता में,
हो गया विवाद।
बढ़ गई बात पर से बात,
नेता ने कहा क्यों रे भिखारी।
चिल्ला–चिल्ला कर, क्यों जान ले रहा हमारी।

अच्छा भला है, काम कर सकता है,
भीख मांगने नाहक भटकता है।
रोज–रोज चले आता है,
जैसे तेरा बाप ही यहां कमाता है।

उपर से मुजोरी करता है,
पेट हमारे टुकड़ों से भरता है।

जरा देख तेरी क्या औकात है,
सड़कछांप तू करता कैसी बात है।

नेता की बात सुन
जमीन पर रखते हुए झोला।
भिखारी धीरे से नेता से बोला,

क्यों गुस्सा करता है, भाई
इस धंधे से नाहक क्यूं डरता है।
धन्धे को व्यर्थ बदनाम करता है,
ठण्डे दिमाग से सोच, जरा कर विचार,
जितनी चाहे फिर करना चिल्ला–पुकार।।
देख नेता तेरा और मेरा एक ही है धंधा,
मेरा साफ सुथरा पर तेरा है गन्दा।
मैं रोटी और तू वोट मांगता है, सारा शहर ये जानता है।
इसलिए तुझे और मुझे, एक मानता है।।

मैं रोज पेट के लिए भीख मांगता हूं
हर मोहल्ले घर को जानता हूं।
कोई देता, कोई आगे बढ़ाता है,
मैं बढ़ जाता मेरा क्या जाता है।।

thearyasamaj.org

मैं बार–बार उसी मोहल्ले गली में जाता हूं,
रूखी–सूखी जो मिलती, अपनी भूख मिटाता हूं।

पर तू अपनी ओर देख, फिर बोल,
जाने कितनी छिपा रखी हैं पोल।

मैं छोटा तू है बड़े कद वाला,
मौका मिलते ही, करता घोटाला।
मेरी भीख से किसी को, विशेष फर्क नहीं आता।
पर तेरे से पूरा देश ही घबराता।।

मैं बेखटके बार–बार कहीं भी चले जाता,
पर तू तो जाने से मुह छिपाता।

तू भीख मांगता वोट की,
और उसकी आड़ में कमाता है।
काले धंधे करता,
नहीं शरमाता है।

तू भीख के लिए तरह–तरह के स्वांग रचता है,
भीख न दे तो हर नाटक करता है।

मेरी हवस पेट की, रोटी से मिट जाती है।
पर तेरी भूख निरन्तर बढ़ती जाती है।।

मैं सीमित साधन से ही सन्तोष करता,
तू तो दुनिया हजम करने से नहीं डरता।
इसलिए धन्धा दोनों का भले ही है एक,
पर तुझसे तो मेरा ही है नेक।।

– **प्रकाश आर्य, महू**

सफलता की प्राप्ति

सफलता अपने आप नहीं मिलती, अपितु इसको प्राप्त करने के लिए संकल्प लेना पड़ता है, तपस्या करनी पड़ती है, भागना, दौड़ना पड़ता है, भूखा, प्यासा रहना पड़ता है, नींद, आराम छोड़ना पड़ता है, और अपमान भी सहन करना पड़ता है।

thearyasamaj.org

सदा पवित्र, सदा निष्पाप

– डॉ. रामनाथ वेदालंकार

सदा गावः शुचयो विश्वधायसः।
सदा देवा अपरेपसः।। सामवेद 442

ऋषिः त्रसदस्युः। देवता विश्वेदेवाः।
छन्दः द्विपदा विराड् गायत्री।

(सद्रा) सदा (गावः) गौएँ – धेनुएँ, वेदवाणियॉ, सूर्य किरणें (शुचयः) पवित्र (विश्वधायसः) विश्व को रसापान कराने वाली तथा सबका पालन–पोषण करने वाली होती हैं। (सदा) सदा (देवाः) देवजन (अपरेपसः) निष्पाप (होते हैं)।

गौएँ सदा पवित्र हैं, वे विश्वधायाः हैं, सबको अपना अमृतोपान दूध पिलाकर पोषण देने वाली हैं। गौओं का दूध, नवनीत स्वादु, सुपच, स्वास्थ्यकर पोषक होता है, उनके गोबर से घरों को लीपकर पवित्र किया जाता है, उनके मूत्र से अनेकों रोगों का निवारण होता है। सारी गौएँ वेदवाणियां हैं। वे भी सदा पवित्र हैं और अपने गायकों को भी सदा पवित्र करती हैं। वे अपनी शुचि मन्त्रों से मानव जाति को एवं हृदय और शरीर को शुचि रखने का सन्देश दे रही हैं। वे भी विश्वधायाः हैं, सबको अपने ज्ञान रस का पान कराकर परिपुष्ट कर रही हैं। तीसरी गौएं सूर्य किरण हैं। वे भी सदा शुचि हैं, और अपनी ज्योति से मलिन को भी शुचि बनाती हैं, वे भी विश्वधाया हैं क्योंकि बादल बनाकर और वृष्टि करके सब प्राणियों एवं वनस्पतियों को रसपान कराकर तृप्त करती हैं। ये तीनों प्रकार की गौएं हम मानवों को भी शुचि और विश्वधायस होने का सन्देश दे रहीं हैं। उनके समान हम भी शुचि बनें, अपने आत्मा, मन, बुद्धि, इन्द्रियों एवं शरीर को पवित्र रखें। इनके समान हम भी विश्व को आनन्द एवं शान्ति का रस प्रदान करें।

और देखो, देव सदा अपरेपस होते हैं, वे निर्मल निर्दोष, निश्छिद्र एवं निष्पाप रहते हैं। समाज के देव शुद्ध चरित्र वाले विद्वान होते हैं, जो अपने निर्दोष जीवन से सामान्यजनों के सम्मुख आदर्श उपस्थित करते हैं। निर्मल आचरण के कारण ही माता, पिता, आचार्य, अतिथि, अध्यापक, उपदेशक आदि भी देव कहाते हैं। प्रकृति में सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, ऋतु, संवत्सर आदि देव हैं। ये भी सदा निर्दोष रहते हैं, इनकी गति में यदि दोष आ जाये तो सृष्टिचक्र–प्रवर्तन ही समाप्त हो जाये। परमात्मा के इन्द्र, वरूण, रूद्र, विष्णु, यम आदि विभिन्न रूप भी देव हैं। वे भी सदा निर्मल और निर्दोष हैं। इन देवों के निर्दोषता एवं त्रुटिशून्यता के आदर्श को हम भी अपनाएं और स्वयं को अधिक से अधिक त्रुटियों एवं छिद्रों से रहित और उज्जवल जीवनवाला बनायें।

प्रस्तोता – **राजेन्द्र व्यास,** उज्जैन

thearyasamaj.org

अन्वेषण

– रामनरेश त्रिपाठी

मैं ढूंढ़ता तुझे था जब कुंज और वन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में।।

तू आह बन किसी की, तुझको पुकारते था।
मैं था तुझे बुलाता संगीत में भजन में।।

मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू।
मैं बाट जोहता था, तेरी किसी चमन में।।

दुःख से रूला रूलाकर तूने मुझे चिताया।
मैं मस्त हो रहा था तब हाय अंजुमन में।।

बाजे बजा–बजाकर मैं था तुझे रिझाता।
तब तू लगा हुआ था, पतितों के संगठन में।।

तू बीच में खड़ा था बेबस गिरे हुओं के।
मैं स्वर्ग देखता था झुकता कहां चरन में।।

तूने दिए अनेकों अवसर न मिल सका मैं।
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में।।

कैसे तुझे मिलूंगा जब भेद इस कदर है।
हैरान होके भगवन्, आया हूं सरन में।।

तू रूप है किरन में, सौन्दर्य है सुमन में।
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।।

हे दीनबन्धु ! ऐसी प्रतिभा प्रदान कर तू।
देखूं तुझे रगों में, मन में तथा वचन में।।

दुःख में न हार मानूं, सुख में तुझे न भूलूं।
ऐसा प्रभाव भर दे, मेरे अधीर मन में।।

thearyasamaj.org

ईश्वर अद्भुत कलाकार है

— ओम कुमार आर्य

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी महर्षि के समकालीन वे वैदिक विद्यान थे जिन्होंने अपनी असाधारण विद्वता के बलबूते योरोपीय विद्वानों को वेद–विषयक भ्रामक धारणाओं, मान्यताओं और व्याख्याओं का न केवल सटीक खण्डन ही किया अपितु उन्हें यह मानने पर विवश कर दिया कि वेदार्थ की अपनी एक अलग पद्धति है जो पाणीनीय 'अष्टाध यायी' आचार्य यास्क कृत 'रिरुक्त' 'निधण्टु' आदि पर आधारित है। वैदिक संस्कृत 'तत्सम' संस्कृत है तथा लौकिक संस्कृत तद्भव है। 'तद्भव' की व्याकरण अलग है, 'तत्सम' की अलग है। पं. गुरुदत्त ने अपनी पुस्तिका 'वैदिक शब्दावली' में नमूने के तौर पर दो–तीन मन्त्रों के अर्थ विशुद्ध वैदिक पद्धति से किये हैं और साथ में मोनियर विलियम्स, मैक्समूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों के किए हुए अनुवाद भी उद्धत किये हैं और तुलना करके दर्शाया है कि किस प्रकार इन पाश्चात्य विद्वानों ने कहीं जानबूझकर और अधिकतर अपनी नासमझी से अर्थ का अनर्थ करके वैदिक वांगमय के साथ घोर अन्याय किया है।

पं. गुरुदत्त द्वारा किये गये ऋग्वेद के मन्त्र के अनुवाद पर प्रकाश डालने से पूर्व जहां यह स्पष्ट करना भी नितांत समीचीन है कि उन्होंने बड़े विस्तारपूर्वक वेदार्थ करने संबंधी उन अत्यन्त त्रुटिपूर्ण अवैदिक पद्धतियों की प्रमाण सहित आलोचना करके उनकी निरर्थकता सिद्ध की है जो कि भूतकाल में सायण, महीधर, उव्वट आदि भाष्यकारों द्वारा प्रयुक्त की गई थी और उन्नीसवीं सदी के उक्त विद्वान भी उसी का अनुसरण कर रहे थे। यहां यह बताना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि पं. गुरूदत्त ने वेदार्थ संबंधी त्रुटिपूर्ण पद्धतियां को 3 वर्गों में बांटा है — 1. पौराणिक 2. ऐतिहासिक 3. समकालीन

और इन तीनों को ही वेदार्थ के विषय में अत्यन्त दोषपूर्ण, अपर्याप्त एवं अनुपयुक्त सिद्ध किया है। फिर कुछ वेदमन्त्रों का संक्षेप्तः भाष्य करके सही वेदार्थ का उदाहरण प्रस्तुत किया है जिनमें अग्रलिखित मन्त्र एक है —

ओ3म् तरणिर्विश्वदर्शतो ज्यातिष्कृदसि सूर्य।
विश्वमाभासि रोचनम्।। ऋ. 1/50/4

और इस मन्त्र के आधार पर बहुत ही रोचक एवं सरस शैली से बताया है कि परमपिता परमेश्वर जो सृष्टि का कर्ता, धर्ता एवं संहर्ता है, एक कुशल चित्रेरा है, अद्भुत कलाकार है जिसकी सारी रचना विस्मयकारी रूप में विविधतापूर्ण, बहुरंगी, अत्यन्त आकर्षक एवं बेजोड़ है। उसकी कारीगरी बेमिसाल है। किन्तु पं. गुरूदत्त के अर्थ से पहले आओ उस अर्थ को भी देख लें जो मोनियर विलियम्स ने किया है और पण्डित जी ने अपनी पुस्तिका में उसको उद्धत किया है, उसका अर्थ इस प्रकार है —

'हम मरणधर्मा मनुष्यों की पहुंच से परे, तुम हे सूर्य देव, अपने यात्रापथ पर

thearyasamaj.org

सतत् अग्रसर रहते हो, एकदम कांतिमान दृश्यमान्। तुम प्रकाश के स्त्रोत हो और अपने प्रकाश से सारी सृष्टि को प्रकाशित करते हो।

– मोनियर विलियम्स

उक्त अर्थ से स्पष्ट है कि एम विलियम्स ने सूर्य शब्द का प्रचलित शब्दकोषीय (रूढ़) अर्थ लिया है और उसी की गति, कार्य आदि का वर्णन किया है जो कि मन्त्र का एकदम सतही अर्थ है और वास्तविक अर्थ से कोसों दूर है। पं. गुरूदत्त ने वेदार्थ की शास्त्रोक्त पद्धति का अनुसरण करते हुये शब्दों के 'यौगिक' धातुपरक एवं योगरूढ़ि अर्थ करते हुये तरणि और सूर्य को भौतिक सूर्य मात्र नहीं कहा जो अपने सौर मण्डल का अधिपति है और उसे आलोकित करता है किन्तु सूर्य को यहां परमपिता परमेश्वर का वाचक माना है। जो अपनी अनन्त सामर्थ्य और रचना शक्ति से अनन्त प्रकार की आकृतियों, विविधतापूर्ण बहुरंगी दृश्यों का सृजन करता है।

वह परमेश्वर निरालस त्वरागति से अपने नियमों के अन्तर्गत अपने करणीय कियाकलाप करता रहता है और उसके कार्य हम प्राणियों की पहुंच और पकड़ से परे हैं। आगे वे कहते हैं कि रंग, रूप भौतिक पदार्थों के अंतर्निहित गुण नहीं है किन्तु सूर्य की उपस्थिति से उनके अलग–अलग रूप रंग व्यक्त होते हैं। घोर अंधकार सब रंग, रूप हर लेता है, काला, पीला, नीला, लाल, सफेद आदि सब एक समान हैं घोर अन्धकार में। किन्तु सूर्य के प्रकट होते ही वे सब अपनी अलग–अलग छटा, छवि, आकृति, रंग, रूप प्रस्तुत कर देते हैं। ऐसा वे स्वयं नहीं कर रहे, सूर्य का सहारा पाकर कर रहे हैं।

वे बतलाते हैं कि उक्त मन्त्र भी परमेश्वर की इसी प्रगटन, प्रकाशन, सर्जन एवं चित्रण शक्ति ओर इंगित कर रहा है। वे तो यह संकेत भी करते हैं कि वह परमात्मा रूपी सूर्य अपनी अथाह एवं असीम ज्ञान–राशि रूप प्रकाश की किरणें प्राणिमात्र के लाभ और भले के लिये सतत् सब ओर बिखेरता रहता है। उन्हीं के शब्दों में वह विलक्षण आभायुक्त सूर्य (परमेश्वर) कभी भी अस्त न होता हुआ (विश्व दर्शतः) प्राणिमात्र के हितार्थ कार्यरत् है, सारे ब्रह्माण्ड को प्रकाश पूरित कर रहा है और इसे मोहक आकार, प्रकार, विविध रंग रूप प्रदान कर रहा है। (ज्योतिष्कृद्) उस न अस्त होने वाले परमेश्वर की अनन्त आभा से (सूर्य आभासी) यह ब्रह्माण्ड दिव्य आभा से युक्त हैऔर अवर्णनीय रमणीयता एवं आकर्षण से युक्त है। मन्त्र के भाव को और स्पष्ट करते हुए अत्यन्त भाव विभोर होकर आस्तिक पं. गुरूदत्त कहते हैं कि उस कुशल सृष्टा, रचयिता, कालाकार, अनुपम चितेरे की महिमा देखो कि इधर अथाह समुद्र हिलोरे मार रहा है, उधर तपता रेगिस्तान दूर–दूर तक फैला हुआ है, इधर विशाल, उच्चश्रृंगों वाली पर्वतमाला है, उधर पाताल तक गये हुये डरावने खड्ड हैं, इधर नदियों की कल–कल, उधर पक्षियों की मनमोहक चहक, इधर धरती पर विविध नजारे उधर तारों सजा अनन्त रहस्य समेटे नील गगन आदि।

thearyasamaj.org

ये सब उस दिव्य कारीगर की दिव्य कारीगरी, दिव्य मनोहारी नमूने हैं। इन्हीं को देखकर आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के अत्यन्त आस्थावान् हरियाणवी लोकगायक दादा बस्तीराम के कण्ठ से भी सहसा फूट पड़ा था –?

'धन, धन है तेरी कारीगरी करतार' और समीक्षकों को इंग्लिश महाकवि जी चॉसर के काव्य में गजब की विविधता देखकर ईश्वरीय रचना की विविधता याद आई और बोल उठे –

चॉसर के काव्य में "ईश्वर की सृष्टि की विविधता" की झलक मिलती है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि महान वैदिक विद्वान एवं गवेषक पं. गुरूदत्त विद्यार्थी ने उक्त मन्त्र का शास्त्र–सम्मत विधि से अर्थ करते हुए ईश्वर की अप्रतिम रचना शक्ति अनुपम रचना कौशल, मनमोहक कारीगरी, आकर्षक कला एवं मंत्र मुग्ध कर देने वाली मनोरम चित्रण शक्ति का बोध करवाया है। वास्तव में ही ईश्वर अद्भुत कलाकार है, कवि है और जो सौभाग्यशाली व्यक्ति पूर्ण आस्थाभाव से उसके दोनों काव्यों दृश्य काव्य (संसार) श्रव्य एवं पाठ्यकाव्य (वेद) को देखता पढ़ता है वह भी उस अमर कलाकार के संग से अजर, अमर हो जाता है, क्योंकि उसी दिव्य कलाकार ने वेद के माध्यम से अन्यत्र कहा है – देवस्य पश्य काव्यं, न ममार न जीर्यति।

हमें अपने ऋषियों, अपने पूर्व गामी आर्ष विद्वानों के साहित्य का अध्ययन करने की आदत डालनी चाहिये ताकि हम सही अर्थ को जान सकें, गलत को त्यागकर सही को जान सकें, गलत को त्यागकर सही को जीवन में धारण करें और वेदाध्ययन से जीवन में सुख की प्राप्ति कर सकें।

विदाई

शिक्षा प्राप्त करके तपस्वी दयानन्द ने गुरू दण्डीजी को लौंगों से भरी एक थाली भेंट की। पर दण्डी जी बोले, वत्स ! संसार में अज्ञान फैला हुआ है। देश मे वेद विद्या लुप्त हो रही है। इस बढ़ते हुए अन्धकार को चीरकर सत्य धर्म का, वेद का प्रकाश करो, यही हमारी गुरू दक्षिणा है।

गुरू से यह आशीर्वाद और नई प्रेरणा ले स्वामी दयानन्द विदा हुए। देश के कोने–कोने में घूमकर उन्होंने अज्ञान के घोर अन्धकार को दूर करने में अपने प्राणों का जिस प्रकार होम किया, संसार उसे भली भांति जानता है। ऐसा था दण्डीजी का प्रशिक्षण। अन्त में सन् 1868 में 71 वर्ष की आयु में दण्डी स्वामी विरजानन्द महाराज ने इस भौतिक देह को छोड़ दिया। उनकी मृत्यु पर महर्षि दयानन्द ने आर्त स्वर में कहा था – आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया। यह है, दण्डीजी का आदर्श चरित्र, जिनका लोहा भारत ही नहीं, सारा संसार माना है।

thearyasamaj.org

बाल स्तंभ

thearyasamaj.org

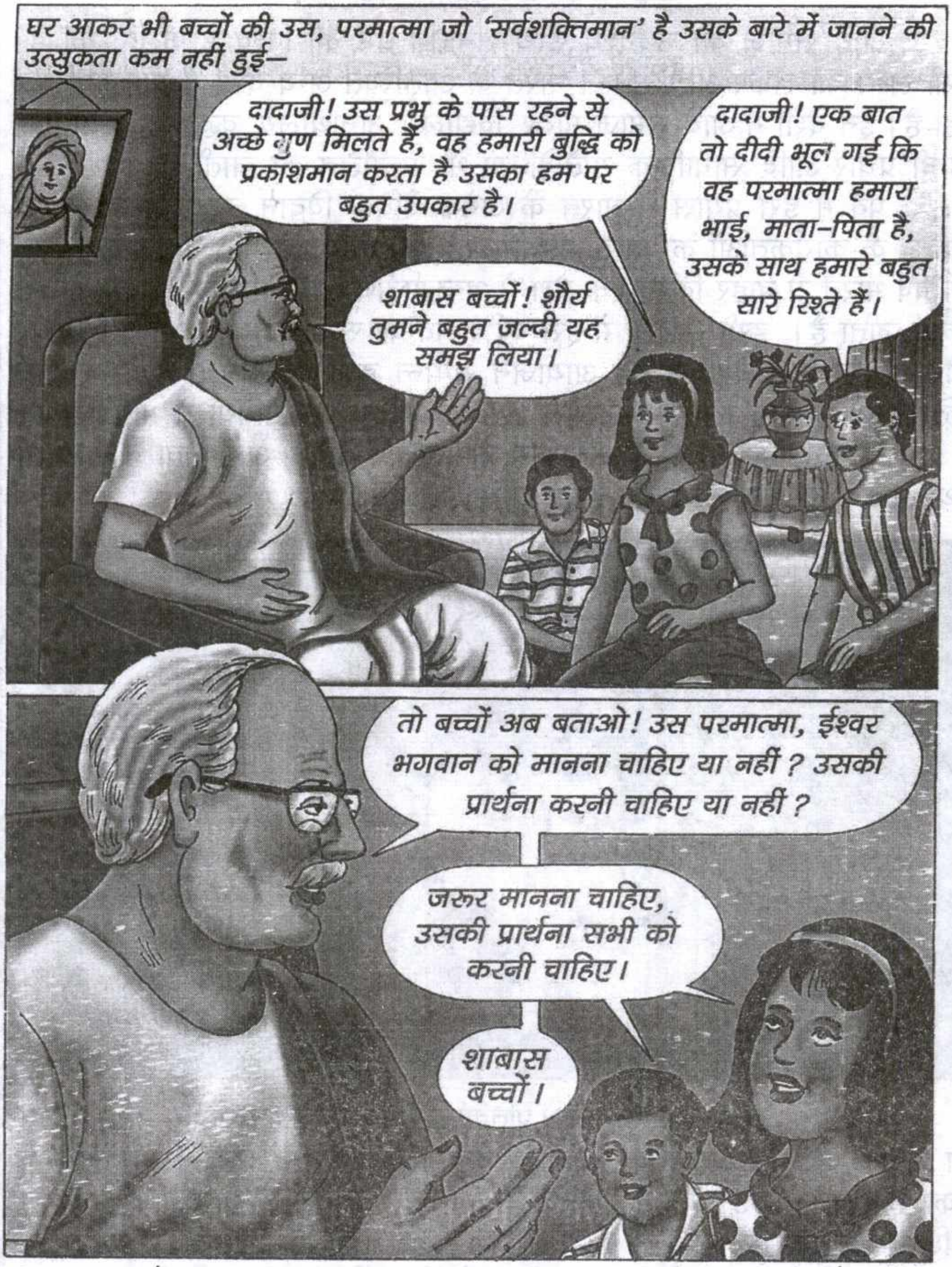

thearyasamaj.org

विदेश में वेद प्रचार

आर्य समाज का उद्‌देश्य सत्य सनातन धर्म को विश्व में फैलाने का है। इसी लक्ष्य को लेकर आर्य समाज भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में यह कार्य कर रहा है। इन देशों में आर्य समाज मंदिर, विद्यालय, अनाथालय, वृद्धाश्रम, अस्पताल, हिन्दी प्रचार आदि सामाजिक गतिविधियां भी संचालित की जाती है।

पूर्व में इस प्रयास में भारत के अनेक वैदिक विद्वान, सन्यासी और आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का बहुत सहयोग रहा है। कार्य को गति प्रदान करने हेतु प्रतिवर्ष भारत से बाहर किसी एक देश में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाता है। इसी श्रृंखला में इस वर्ष 1 नवम्बर से 9 नवम्बर के मध्य सिंगापुर और थाईलैन्ड दो देशों में यह आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें 9 देशों के आर्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत से 225 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

विभिन्न देशों से आमन्त्रित आर्य समाज के विद्वान, आर्य नेता व सन्यासी तथा 500 से अधिक कार्यकर्ता इसमें सम्मिलित हुए।

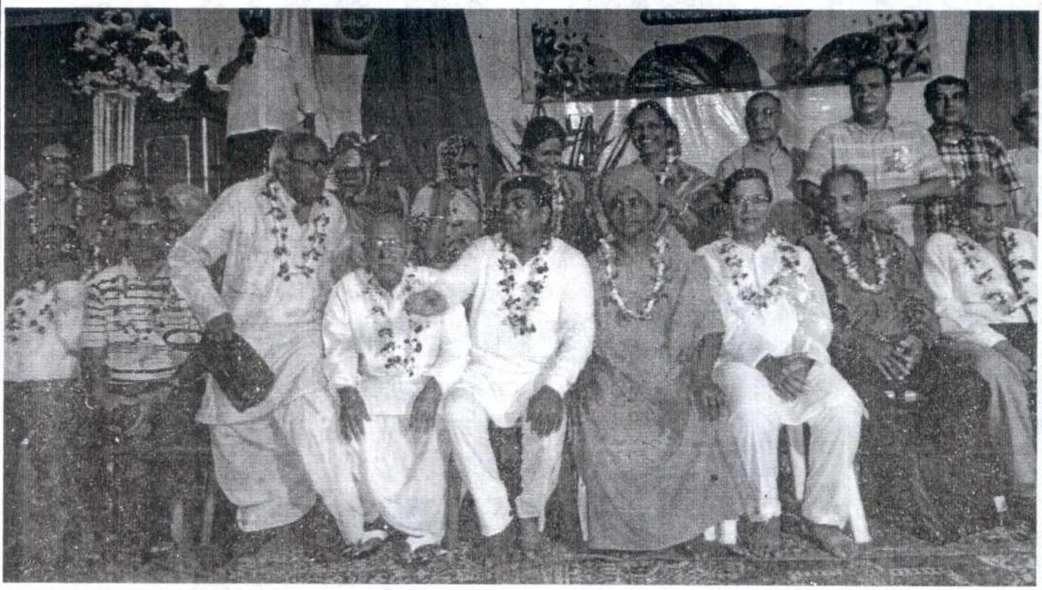

सन् 2006 से ही देश–विदेशों में प्रतिवर्ष इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का प्रारंभ हुआ और अभी तक 9 ऐसे कार्यक्रमों का विभिन्न देशों में आयोजन हो चुका है। आगामी 3 वर्षो में आस्ट्रेलिया, बर्मा, व नेपाल में आयोजन होने का निश्चित हो चुका है।

इस दो देशीय कार्यक्रम के आयोजन में श्री आर्य सुरेश अग्रवाल (अहमदाबाद), श्री राजसिंह आर्य (दिल्ली), श्री विनय आर्य (दिल्ली) का विशेष सहयोग रहा।

thearyasamaj.org

कार्यक्रम से प्रभावित होकर इंडोनेशिया में जकार्ता में आर्य समाज की स्थापना की घोषणा कुछ सदस्यों ने की।

विभिन्न सम्मेलनों के आयोजन में महिला सम्मेलन भी आयोजित किया था जिसमें श्रीमती गीता आर्य ने भी थाईलैंड में अपने विचार व्यक्त किए इस यात्रा में महू से श्री राधेश्याम बियाणी, श्रीमती गीता आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्रीमती पुष्पा आर्य, श्री संजय सोनी, इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश से स्वामी ऋतस्पति, भगवानदासजी अग्रवाल, श्रीमती अग्रवाल, श्री राजेन्द्र व्यास, श्री वेदप्रकाश आर्य एवं श्रीमती सविता आर्य, उज्जैन, श्री अरूण आर्य, श्रीमती ऊषा आर्य, श्री तिलकराज गुलियानी, श्रीमती अंजना गुलियानी, श्री महेन्द्र शर्मा, श्रीमती सविता शर्मा, इन्दौर, श्री ब्रह्मचारी नन्दकिशोरजी आदि ने भी भाग लिया। इस प्रकार सत्य सनातन धर्म व हिन्दी प्रचार प्रसार में आर्य समाज निरन्तर विदेशों में सक्रिय होकर विस्तार कर रहा है।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

आर्य समाज विदिशा का 96 वॉ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज विदिशा का 96 वां वार्षिकोत्सव दिनांक 12 दिसम्बर से 14 दिसम्बर 2014 तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेदिक विद्वान श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली, सुश्री अंजलि आर्या, हरियाणा एवं सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य एवं अन्य विद्वान पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में आर्यजन पधारकर लाभ प्राप्त करें। प्रधान, मन्त्री एवं समस्त कार्यकारिणी आर्य समाज विदिशा ने पध ारने की अपील की है।

thearyasamaj.org

श्रीमद् दयानन्द निर्वाण दिवस, दीपावली पर्व मनाया

नागदा। आर्य समाज मन्दिर नागदा पड़ल्या कला सेवाराम पटेल की बावड़ी पर युग प्रवर्तक ऋषि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस सायंकाल यज्ञ कर दीपावली पर्व मनाया गया।

जानकारी देते हुए अजय पटेल ने बताया कि यज्ञ के होता मन्त्री कमल आर्य, यज्ञ के ब्रह्मा पटेल रामसिंह आंजना, उद्गाता अग्निवेश पाण्डेय, यज्ञ के अध्वर्यु प्रकाश आर्य यज्ञ वेदी पर उपस्थित थे। यजमान के रूप में यशवन्त आर्य ने डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी के आचार्यत्व में महामृत्युंजय मन्त्र व ऋग्वेद की ऋचाओं से यज्ञाहुतियां दी।

यज्ञ समापन के बाद आर्यन आर्य ने दयानन्द पर गीत सुनाया। पश्चात डॉ. सत्यार्थी द्वारा धन तेरस, रूप चौदस, लक्ष्मीपूजन, गोवर्धन पूजा व भाई दूज पर विधि सम्मत प्रकाश डाला।

सूचना

7 दिसम्बर 2014 को उज्जैन में कार्यशाला का आयोजन

कार्यशाला में इन्दौर, उज्जैन, रतलाम और भोपाल संभाग की समस्त समाजों के मन्त्री एवं प्रधान तथा एक महिला प्रतिनिधि को एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसमें संगठन के संचालन हेतु नियम–उपनियमों की सत्संग, प्रचार और संगठन वृद्धि के संबंध में चर्चा होगी।

सभी समाज के संभागीय उपप्रधान/उपमन्त्री भी इसमें सम्मिलित रहेगे। बैठक प्रातः 11 बजे से प्रारंभ होगी और भोजन अवकाश के अतिरिक्त 5 बजे तक चलेगी।

0 आर्य समाज में पुरोहित व संस्कार करवाने वालों की कमी को दृष्टिगत रखते हुए सार्वदेशिक सभा ने शीघ्र ही नवयुवकों को प्रशिक्षित कर आर्य समाजों में पुरोहितों के रिक्त पदों को पूर्ण करने का निर्णय लिया है और वह कार्य प्रारंभ होने जा रहा है। 12 वीं कक्षा तक अध्ययन किए हुए। 30 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति इसमें भाग ले सकते हैं। इच्छुक व्यक्ति अपना नाम, पता, उम्र और शैक्षणिक योग्यता के अतिरिक्त अन्य कोई योग्यता है तो मेरे निम्न पते **(प्रकाश आर्य, आर्य समाज, महू)** पर भेजें। यह प्रशिक्षण 2 से 3 माह का होगा।

सूचना

[illegible]न! म.भा. आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा छपवाये गये ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के [illegible] सूत्रों व जीवन उन्नति कारक विचारों के आकर्षक स्टीकर सभा कार्यालय, [illegible]गंज, दयानन्द गंज इंदौर, महू आर्य समाज, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर [illegible] से प्राप्त कर सकते हैं।

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 98262-71062